गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत...

9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018

गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका



Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
9 दिसम्बर से
15 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

ई- जन्म पत्रिका	E HOROSCOPE
अत्याधुनिक ज्योतिष पद्धति द्वारा उत्कृष्ट भविष्यवाणी के साथ १००+ पेज में प्रस्तुत	Create By Advanced Astrology Excellent Prediction 100+ Pages

हिंदी/ English में मूल्य मात्र ~~910/-~~ Limited time offer 450 Only

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

संपादकीय

इस अंक में हमने हमारे ऋषि-मुनि और ज्योतिषाचार्योने बडी ही सरलता से हर बीमारी का संबंध ग्रहो के साथ होने का उल्लेख ज्योतिष ग्रंथो मे किया हैं। व्यक्ति की जन्म कुंडली में जन्म समय में स्थित ग्रहो कि स्थिती, ग्रहोकि महादशा, अंतर दशा एवं ग्रहो के वर्तमान समय के ग्रहो की स्थिति से व्यक्ति के स्वास्थ्य एवं रोग का आंकलन होता हैं। आपने प्रायः देखा होगा स्वस्थ व्यक्ति भी कभी-कभी अचानक बीमार पड़ जाता हैं। जो दरसल खान-पान में बरती गई कोई लापरवाही हो सकती हैं। कभी-कभी व्यक्ति को आनुवांशिक यानी माता-पिता से प्राप्त रोग हो सकते है। ज्योतिष विद्वान के मत से व्यक्ति के जन्म समय पर ग्रहों कि स्थिति एवं प्रभाव से व्यक्ति को उम्र के किस मोड़ पर उसे कोनसी बीमारी हो यह सुनिश्चित कर सकते हैं। यदि समय से पहले पता चल जाये व्यक्ति कब किस रोग से पीड़ित हो सकता हैं, तो पहले से सचेत होकर रोग का से बचाव हेतु या उसका निदान किया जा सकता हैं। क्योकि समय से पूर्व रोग के बारे में पता चलने से व्यक्ति खान-पान में परहेज कर बीमारी को कम करने या टालने का प्रयास कर सकता हैं। जन्म कुंडली मे रोग का निर्णय कुंडली के छठे भाव में स्थित ग्रह, छठे भाव के स्वामी कि स्थिति छठे भाव पर ग्रह कि द्रष्टि, छठे भाव का कारक ग्रह के आधार पर जान सकते हैं, कि भविष्य में जातक किस रोग से पीडित हो सकता हैं। कुछ मुख्य बातों को समझ कर आप किसी भी व्यक्ति कि जन्म कुंडली से होने वाले रोगों के बारे में सचेत कर सकते हैं। वैसे भी आकाश में भ्रमण करते सभी ग्रह और नक्षत्र रोग उत्पन्न कर सकते हैं। जानकारो के माने तो मानव शरीर में विविध रोग अशुद्ध और अखाद्य भोजन, अनियमित रहन-सहन, संकुचित विचार धारा तथा दूसरो से छल-कपट से भरा व्यवहार रखने से होते हैं। किसी भी बीमारी को कोई भी दवाई स्थायी इलाज नहीं कर सकती। दवाईयां थोड़े समय के लिए एक रोग को दबाकर, कुछ ही समय में दूसरा रोग को उभार देती है। इसी लिये लोगो को दवाइयों की गुलामी से बचकर, अपना आहार-विहार शुद्ध, रहन-सहन नियम से, विचारो से उदार एवं प्रसन्न बने रहेंगे। आदर्श आहार-विहार और विचार-व्यवहार ये चारो और से मनुष्य के स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होती हैं। किसी जानकार चिकित्सय से सलाह प्राप्त कर प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को अपनाने का प्रयास करें जिसमें नुक्शान की संभावना नहीं हो और बिमारी जड़से निकल जाएं। उसी के साथ संयम और निती-नियमो का भी पालन करें। काल मृत्यु एवं असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये शीघ्र प्रभावि उपाय महामृत्युंजय मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं **"शरीरं व्याधिमंदिरम्"** अर्थात् ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यधि पीड़ाए उत्पन्न होती रहती हैं। शास्त्रोक्त विधान के अनुशार देवी भगवती ने भगवान शिव से कहा कि, हे देव! आप मुझे मृत्यु से रक्षा करने वाला और सभी प्रकार के अशुभों का नाश करने वाल कवच बतलाईये? तब शिवजी ने महामृत्युंजय कवच के बारे में बतलाया।

इस साप्ताहिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं …

चिंतन जोशी

***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

महामृत्युंजय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अकाल मृत्यु एवं असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये शीघ्र प्रभावि उपाय

अकाल मृत्यु एवं असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये शीघ्र प्रभावि उपाय महामृत्युंजय

मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं

"शरीरं व्याधिमंदिरम्" अर्थात् ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यघि पीड़ाए उत्पन्न होती रहती हैं।

ज्योतिष शास्त्र एवं आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य द्वारा पूर्वकाल में किये गयें कर्मो का फल ही व्यक्ति के शरीर में विभिन्न रोगों के रूप में प्रगट होतें हैं।

हरित सहिंता के अनुशार:

जन्मान्तर कृतम् पापम् व्याधिरुपेण बाधते।
तच्छान्तिरौषधैर्दानर्जपहोमसुरार्चनैः॥

अर्थातः पूर्व जन्म में किये गये पाप कर्म ही व्याधि के रूप में हमारे शरीर में उत्पन्न हो कर कष्टकारी हो जाता हैं। तथा औषध, दान, जप, होम व देवपूजा से रोग की शांति होती हैं।

शास्त्रोक्त विधान के अनुशार देवी भगवती ने भगवान शिव से कहा कि, हे देव! आप मुझे मृत्यु से रक्षा करने वाला और सभी प्रकार के अशुभों का नाश करने वाल कवच बतलाईये? तब शिवजी ने महामृत्युंजय कवच के बारे में बतलाया। विद्वानो ने महामृत्युंजय कवच को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अचूक व अद्भूत उपाय माना हैं। आज के इर्षा भरे युग में हर मनुष्य को सभी प्रकार के अशुभ से अपनी रक्षा हेतु महामृत्युंजय कवच को अवश्य धारण करना चाहिये।

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोद्य महामृत्युंजय कवच धारण कर अन्य सामग्री को अपने पूजा स्थान में स्थापित करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, मनुष्य के सर्व रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि जीवन में किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, मारक ग्रहो की दशा का अशुभ प्रभाव प्राप्त होकर मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त हो रहे हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। मृत्युजय देवाधिदेव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन **शिव पुराण, काशीखंड** और **महापुराण** में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र का महत्व:

मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय: स्मृत: या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,

अर्थात: जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता है।

मंत्र जप के लिए विशेष:

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥ (श्रीमद् भगवद् गीता:षोडशोऽध्याय)

भावार्थ : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परमगति को और न सुख को ही॥23॥

ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ऋषि का जीवन अत्यंत अल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र के जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा। भगवान शिवजी शनिदेव के गुरु भी हैं इस लिए महामृत्युंजय मंत्र के जप से शनि से संबंधित पीडाए दूर हो जाती हैं।

जो मनुष्य पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र का जप व अनुष्ठान संपन्न करने में असमर्थ हो! वह व्यक्ति संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित **अमोद्य महामृत्युंजय कवच** व सामग्री गुरुत्व कार्यालय द्वारा बनवा सकते हैं।

नोट: व्यक्ति अपने कुल ब्राह्मण/पुरोहित द्वारा भी पूर्ण विधि-विधान से मंत्र जप व अनुष्ठान संपन्न करवा सकते हैं। यदि आप अनुष्ठान से संबंधित यंत्र व अन्य सामग्री प्राप्त करना चाहते हैं तो गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

अमोद्य महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

ज्योतिष द्वारा रोग निदान

संकलन गुरुत्व कार्यालय

मत्स्य पुराण के अनुशार देवताओं और राक्षसों ने जब समुद्र मंथन किया था धन तेरस के दिन धनवंतरी नामक देवता अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए थे। धनवंतरी धन, स्वास्थय व आयु के अधिपति देवता हैं। धनवंतरी को देवों के वैध व चिकित्सक के रुप में जाना जाता हैं।



धनवंतरी ही सृष्टी के सर्व प्रथम चिकित्सक माने जाते हैं। श्री धनवंतरी ने ही आयुर्वेद को प्रतिष्ठित किया था। उनके बाद में ऋषि चरक जैसे अनेक आयुर्वेदाचार्य हो, गये। जिन्हों ने मनुष्य मात्र के स्वास्थ्य की देखरेख के लिए कार्य किये। इसी कारण प्राचीन काल में अधितर व्यक्ति का स्वस्थ उत्तम रहता था।

क्योकि प्राचिन कालमें प्रायः सभी चिकित्सक आयुर्वेद के साथ-साथ ज्योतिष का भी विशेष ज्ञान रखते थे। इसी लिए चिकित्सक बीमारी का परीक्षण ग्रहों की शुभ-अशुभ स्थिति के अनुसार सरलता से कर लेते थे। आज के आधुनिक युग के चिकित्सक को भी ज्योतिष विद्या का ज्ञान रखना चाहिए जिससे वे सरलता से प्रायः सभी रोगो का निदान करके रोगी की उपयुक्त चिकित्सा करने में पूर्णतः सक्षम हों सके।

ज्योतिष के अनुशार हर ग्रह और राशि मानव शरीर पर अपना विशेष प्रभाव रखते हैं, इस लिए उसे जानना भी अति आवश्यक हैं। सामान्यतः जन्म कुंडली में जो राशि अथवा जो ग्रह छठे, आठवें, या बारहवें स्थान से पीड़ित हो अथवा छठे, आठवें, या बारहवें स्थानों के स्वामी हो कर पीड़ित होरहे हो, तो उनसे संबंधित बीमारी की संभावना अधिक रहती हैं। जन्म कुंडली के अनुसार प्रत्येक स्थान और राशि से मानव शरीर के कौन-कौन से अंग प्रभावित होते हैं, उनसे संबंधित जानकारी दी जा रही हैं।

जन्मकुंडली से रोग निदान

ज्योतिष शास्त्र एवं आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य द्वारा पूर्वकाल में किये गयें कर्मो का फल ही व्यक्ति के शरीर में विभिन्न रोगों के रूप में प्रगट होतें हैं।

हरित सहिंता के अनुशार:

जन्मान्तर कृतम् पापम् व्याधिरुपेण बाधते।
तच्छान्तिरौषधैर्दानर्जपहोमसुरार्चनैः॥

अर्थातः पूर्व जन्म में किया गये पाप कर्म ही व्याधि के रूप में हमारे शरीर में उत्पन्न हो कर कष्टकारी हो जाता हैं। तथा औषध, दान, जप, होम व देवपूजा से रोग की शांति होती हैं।

आयुर्वेद के जानकारो की माने तो कर्मदोष को ही रोग की उत्पत्ति का कारण माना गया हैं।

आयुर्वेद में कर्म के मुख्य तीन भेद माने गए हैं:

- एक हैं सन्चित कर्म
- दूसरा हैं प्रारब्ध कर्म
- तीसरा हैं क्रियमाण



आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य के संचित कर्म ही कर्म जनित रोगों के प्रमुख कारण होते हैं जिसे व्यक्ति प्रारब्ध के रूप में भोगता हैं।

वर्तमान समय में मनुष्य के द्वारा किये जाने वाला कर्म ही क्रियमाण होता हैं।

वर्तमान काल में अनुचित आहार-विहार के कारण भी शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

आयुर्वेद आचार्य सुश्रुत, चरक व त्रिष्ठाचार्य के मतानुसार कुष्ठरोग, उदररोग, गुदारोग, उन्माद, अपस्मार, पंगुता, भगन्दर, मधुमेह(प्रमेह), द्रष्टी हिनता, अर्श, पक्षाघात, देह कापना, अश्मरी, संग्रहणी, रक्तार्बुद, कान, वाणी दोष इत्यादि रोग, परस्त्रीगमन, ब्रहम हत्या, पर धन हरण, बालक-स्त्री-निर्दोष व्यक्ति की हत्या आदि दुष्कर्मों के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं। इस लिये मनुष्य द्वारा इस जन्म या पूर्व जन्म में किया गया पापकर्म ही रोगों का कारण होता हैं। इस लिये जो व्यक्ति खान-पान में सयंमी और आचार-विचार में पुरी तरह शुद्ध हैं उन्हें भी कभी-कभी गंभीर रोगों का शिकार हो कर कष्ट भोगने पडते हैं।

जन्म कुंडली से रोग व रोगके समय का ज्ञान

भारतीय ज्योतिषाचार्य हजारो वर्ष पूर्व ही जन्म कुंडली के माध्यम से यह ज्ञात करने में पूर्णताः सक्षम थे कि किसी व्यक्ति को कब तथा क्या बीमारी हो सकती हैं।

ज्योतिषशास्त्रो से प्राप्त ज्ञान एवं अभीतक हुएं नये-नये ज्योतिषी शोध के अनुशार जन्म यह जानना और भी सरल है कि किसी मनुष्य को कब तथा क्या बीमारी हो सकती है।

जन्म कुंडली से रोग व रोगके समय का ज्ञात करने हेतु जन्म कुंडली में ग्रह की स्थिति, ग्रह गोचर तथा दशा-अन्तर्दशा का शूक्ष्म अध्ययन अति आवश्यक होता हैं। जन्म पत्रिका के शूक्ष्म अध्ययन के माध्यम से व्यक्ति के द्वारा पूर्वजन्म में किये गये सभी शुभ-अशुभ कर्मो फल को बताने में सक्षम होती हैं जिसका फल व्यक्ति इस जन्म में भोगता हैं।

यदुपचित मन्य जन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्मण: प्राप्तिम ।
व्यंज्ज्यती शास्त्र मेंत तमसि द्रव्याणि दीप इव॥

(फलित मार्तण्ड)

ज्योतिष ग्रन्थ **प्रश्न मार्ग** में रोगों का दो प्रकार से वर्गीकरण किया हैं। 1 सहज रोग 2 *आगंतुक रोग*

1 सहज रोग: **प्रश्न मार्ग** में जन्म जात रोगों को सहज रोगों के वर्ग में रखा गया हैं। व्यक्ति की अंग हीनता, जन्म से द्रष्टी हिनता, गूंगापन, बहरापन, पागलपन, वक्र ता एवं नपुंसकता आदि रोग सहज रोग होते हैं। जो व्यक्ति में जन्म से ही होते हैं। सहज रोगों का विचार करने हेतु कुंडली में अस्टमेश (अष्टम भाव का स्वामी) तथा आठवें भावः में स्थित, निर्बल ग्रहों से किया जाता हैं। एसे रोग प्राय: दीर्घ कालिक और असाध्य हो जाते हैं।

2 आगंतुक रोग: चोट लगना, अभिचार, महामारी, दुर्घटना, शत्रु द्वारा आघात आदि प्रत्यक्ष कारणों से होने वाले कष्ट तथा ज्वर, रक्त विकार, धातु रोग, उदर विकार, वात-पित-कफ से संबंधित समस्या से होने वाले रोग जो अप्रत्यक्ष कारणों से होते हैं उसे **प्रश्न मार्ग** में आगंतुक रोग कहे गये हैं। आगंतुक रोग का विचार षष्टेश (छठे भाव काका स्वामी ग्रह), षष्टम भाव में स्थित निर्बल ग्रहों एवं जन्म कुंडली में पाप ग्रहो द्वारा पीड़ित राशि-भाव-ग्रह से किया जाता हैं। जन्म कुंडली से रोग का निर्णय करने हेतु कुंडली में भाव और राशि से संबंधित शरीर के विभिन्न अंग पर ग्रहो का प्रभाव एवं रोग को जानना आवश्यक हैं।

जन्म कुंडली में जो भाव अथवा राशि पाप ग्रह से पीड़ित हो रही हो और जिस राशि का स्वामी त्रिक भाव (अर्थात षष्टम, अष्टम और द्वादश भाव) में स्थित हो उस राशि या भाव संबंधित अंग रोग से पीड़ित हो जाते हैं ।
ज्योतिष के अनुशार बारह भाव एवं राशि से संबंधित शरीर के अंग और रोग इस प्रकार हैं।

भाव	राशि	तत्व	शरीर का अंग	रोग
पहला	मेष	अग्नि	सिर, मस्तिष्क, सिर के केश, जीवन शक्ति,	मस्तिष्क रोग, सिर पीडा, चक्कर आना, मिर्गी, उन्माद, गंजापन, ज्वर, गर्मी, मस्तिष्क ज्वर इत्यादि।
दूसरा	वृष	पृथ्वी	मुख, नेत्र, चेहरा, नाक, दांत, जीभ, होंठ, ग्रास नली	मुख के रोग, आंत, नेत्र, दांत, नाक, संक्रमण, आदि के रोग आदि।
तीसरा	मिथुन	वायु	कंठ, कर्ण, हाथ, भुजा, कन्धा, श्वास नली, रक्त नली,	खांसी, दमा, गले मे पीड़ा, बाजु मे पीड़ा, कर्ण पीड़ा आदि ।
चौथा	कर्क	जल	छाती, फेफड़े, स्तन, ह्रदय, मन, पसलियाँ, रक्त संचार,	ह्रदय रोग, श्वास रोग, मनोविकार, पसलियों का रोग, अरुचि आदि ।
पांचवा	सिंह	अग्नि	उदर, जिगर, तिल्ली, कोख, मेरु दण्ड, बुद्धि, शक्ति, ह्रदय, पीठ, मेरुदंड, आमाशय, आंत,	उदर पीडा, अपच, जिगर का रोग, पीलिया, बुद्धिहीनता, गर्भाशय मे विकार आदि।
छठा	कन्या	पृथ्वी	कमर, आन्त, नाभि, उदर के बाहरी भाग, हड्डी, आंतें, मांस	दस्त, आन्त्रदोष, हर्निया, पथरी, अपेंडिक्स, कमर मे दर्द, दुर्घटनाआदि ।
सातवाँ	तुला	वायु	मूत्राशय, गुर्दे, काम, श्वास क्रिया,	गुर्दे मे रोग, मूत्राशय के रोग, मधुमेह, प्रदर, पथरी, मूत्रक्रिच्छ आदि ।
आठवां	वृश्चिक	जल	गुदा, अंडकोष, जननैन्द्रिय, लिंग, योनि, रक्त संचार,	अर्श, भगंदर, गुप्त रोग, मासिक धर्म के रोग, दुर्घटना इत्यादि।
नवां	धनु	अग्नि	जांघ , नितंब	वात विकार, कुल्हे का दर्द, गठिया, साईटिका, मज्जा रोग, यकृत दोष इत्यादि।
दसवां	मकर	पृथ्वी	घुटने, जांघ, घुटनों के जोड़, हड्डी, मांस,	वात विकार, गठिया, साईटिका इत्यादि ।
ग्यारहवां	कुम्भ	वायु	टखने, पिंड लियां, घुटने, जांघ के जोड़, हड्डियों-नसों,	काफ पेन, नसों की कमजोरी, एंठन इत्यादि।
बारहवां	मीन	जल	पांव, पांव की उंगलि, नसों, जोड़ों, रक्त संचार	पोलियो, आमवात, रोगविकार, पैरमें पीडा इत्यादि।

ग्रहों से सम्बंधित शरीर के अंग और रोग

यदि नवग्रह में से कोई ग्रह शत्रु राशि-नीच राशिः नवांश में, षड्बलहींन, पापयुक्त, पाप ग्रह से दृष्ट, त्रिकभाव में स्थित हों, तो संबंधित ग्रह अपने कारकत्व से सम्बंधित रोग उत्पन्न करते हैं। नव ग्रहों से सम्बंधित अंग, धातु और रोग इस प्रकार हैं।

ग्रह	अंग	धातु	रोग
सूर्य	नेत्र ,सिर हृदय	अस्थि	ज्वर, हृदय रोग, पेट, अस्थि रोग पित्त, जलन, मिर्गी, दांयीं आंख, शस्त्र से आघात, ब्रेन फीवर, घाव, जलने का घाव, गिरना, रक्त प्रवाह में बाधा आदि।
चन्द्र	नेत्र, मन, कंठ, फेफडे	रक्त	शरीर के तरल पदार्थ, बायीं आंख, जलोदर, नेत्रदोष, निम्न रक्त चाप, छाती, अरुचि, मनोरोग, रक्त की कमी, कफ मन्दाग्नि, अनिद्रा, पीलिया, खांसी -जुकाम, महिलाओं में मासिक चक्र।
मंगल	मांसपेशियां, उदर, पीठ	मांस, मज्जा	जलन, दुर्घटना, बवासीर, उच्च रक्तचाप, खुजली, मज्जा रोग, जानवरों द्वारा काटना, विष भय, निर्बलता, गुल्म, अभिचार कर्म, जलना, बिजली से भय, घाव, शल्य क्रिया, गर्भपात इत्यादि।
बुध	हाथ, वाणी, कंठ	त्वचा	त्रिदोष, पाण्डु रोग, बहम, कंठ रोग, कुष्ठ, त्वचा रोग, वाणी विकार, फेफड़े, नासिका रोग, बुरे सपने
गुरु	जघन प्रदेश, आंतें	वसा	यकृत, शरीर में चर्बी, मधुमेह, आंत्र ज्वर, गुल्म, हर्निया, सुजन, कफ दोष, स्मृति भंग, कर्ण पीडा, मूर्छा इत्यादि
शुक्र	गुप्तांग	वीर्य	मधुमेह, नेत्र विकार, मूत्र रोग, सुजाक, पथरी, प्रोंसटैंट ग्लांड्स की वृद्धि, शीघ्र पतन, स्वप्न दोष, ऐड्स एवम प्रजनन अंगों से सम्बंधित रोग इत्यादि
शनि	जानू प्रदेश, पैर	स्नायु	थकन, वात रोग, संधि रोग, पक्षाघात, पोलियो, कैंसर, कमजोरी, पैर में चोट, लसिका तंत्र, लकवा, उदासी, थकान,
राहू	-	-	हड्डियां, कुष्ठ, हृदय रोग, विष भय, मसूरिका, कृमि विकार, अपस्मार, डर इत्यादि
केतु	-	-	चर्म विकार, दुर्घटना, गर्भ श्राव, विषभय, हकलाना, पहचानने में दिक्कत, आंत्र, परजीवी,

रोग के प्रभाव का समय

पीड़ा कारक ग्रह अपनी ॠतू में, अपने वार में, मासेश होने पर अपने मास में, वर्षेश होने पर अपने वर्ष में, अपनी महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यंतर दशा एवं सूक्षम दशा में रोग कारक होते हैं। गोचर में पीड़ित भाव या राशि में जाने पर भी निर्बल और पाप ग्रह रोग उत्पन्न करते हैं।

सूर्य २२ वें,	बुध ३५ वें,	शनि ३६ वें,
चन्द्र २४ वें,	गुरु १६ वें,	राहु ४४ वें,
मंगल २८ वें,	शुक्र २५ वें,	केतु ४८ वें,

वर्ष में अपना विशेष शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं।

रोग शान्ति के उपाय

ग्रहों की विंशोत्तरी दशा तथा गोचर स्थिति से वर्तमान या भविष्य में होने वाले रोग को समय से पूर्व अनुमान लगा कर पीडाकारक ग्रहों से संबंधित दान, जप, हवन, यंत्र, कवच, व रत्न इत्यादि धारण करने से ग्रहो के अशुभ प्रभाव

को कम कर रोग होने की संभावनाए दूर सकते हैं अथवा रोग की तीव्रता में कम की जा सकती हैं। विद्वानो के मतानुशार ग्रहो के उपचार से चिकित्सक की औषधि के शुभ प्रभाव में भी वृद्धि हो जाती हैं।

प्रश्न मार्ग के अनुसार औषधियों का दान देने से तथा रोगी की निस्वार्थ सेवा करने से व्यक्ति को ग्रह से संबंधित रोग पीड़ा नहीं देते। दीर्घ कालिक एवं असाध्य रोगों की शांति के लिए रुद्र सूक्त का पाठ, श्री महा मृत्युंजय का मंत्र जप तुला दान, छाया दान, रुद्राभिषेक, पुरूष सूक्त का जप तथा विष्णु सहस्र नाम का जप लाभकारी सिद्ध होता हैं ।

कर्म विपाक सहिंता के अनुसार प्रायश्चित करने पर भी असाध्य रोगों की शांति होती है ।

Beautiful Stone Bracelets



Natural Om Mani Padme Hum Bracelet 8 MM

Rs. 415



Natural Citrine Golden Topaz Sunehla (सुनेहला) Bracelet 8 MM

Rs. 415

- Lapis Lazuli Bracelet
- Rudraksha Bracelet
- Pearl Bracelet
- Smoky Quartz Bracelet
- Druzy Agate Beads Bracelet
- Howlite Bracelet
- Aquamarine Bracelet
- White Agate Bracelet
- Amethyst Bracelet
- Black Obsidian Bracelet
- Red Carnelian Bracelet
- Tiger Eye Bracelet
- Lava (slag) Bracelet
- Blood Stone Bracelet
- Green Jade Bracelet
- 7 Chakra Bracelet
- Amanzonite Bracelet
- Amethyst Jade
- Sodalite Bracelet
- Unakite Bracelet
- Calcite Bracelet
- Yellow Jade Bracelet
- Rose Quartz Bracelet
- Snow Flakes Bracelet

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDA

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785,

Shop @ : www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in

उत्तम स्वास्थ्य लाभ के लिये करे सूर्य स्तोत्र का पाठ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

सूर्य स्तोत्र में सूर्य देव के २१ पवित्र, शुभ एवं गोपनीय नाम हैं।



स्तोत्र :

विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोक प्रकाशकः श्री माँल्लोक चक्षुर्मुहेश्वरः॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा रवेः॥

सूर्य देव के २१ नाम :

'विकर्तन, विवस्वान, मार्तण्ड, भास्कर, रवि, लोकप्रकाशक, श्रीमान, लोकचक्षु, महेश्वर, लोकसाक्षी, त्रिलोकेश, कर्ता, हर्ता, तमिस्राहा, तपन, तापन, शुचि, सप्ताश्ववाहन, गभस्तिहस्त, ब्रह्मा और सर्वदेव नमस्कृत-

सूर्यदेव के इक्कीस नामों का यह स्तोत्र भगवान सूर्य को सर्वदा प्रिय है।'

(ब्रह्म पुराण : 31.31-33)

सूर्य स्तोत्र का नियमीत सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय पाठ करने से व्यक्ति सब पपों से मुक्त होकर, **उसका शरीर निरोगी** होता हैं, एवं धन की वृद्धि कर व्यक्ति का यश चरों और फैलाने वाला हैं। इसे स्तोत्रराज भी काहा जाता हैं। सूर्य स्तोत्र को तीनों लोकों में प्रसिद्धि प्राप्त हैं।

संपूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित **सूर्ययंत्र** को पूजा स्थान मे स्थापीत कर के नित्य यंत्र को धूप-दीप करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

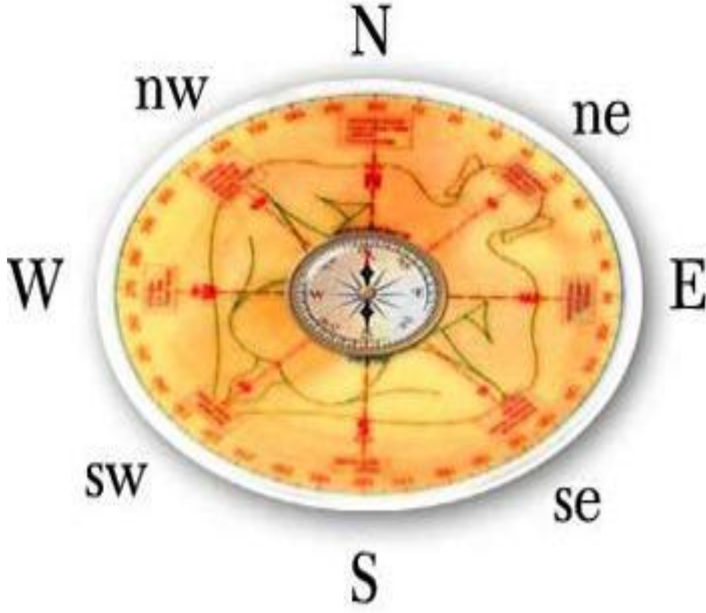
क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?

आपके पास अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पूजा-अर्चना, साधना, मंत्र जाप इत्यादि करने का समय नहीं हैं? अब आप अपनी समस्याओं से बीना किसी विशेष पूजा-अर्चना, विधि-विधान के आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सके एवं आपको अपने जीवन के समस्त सुखो को प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त हो सके इस लिये गुरुत्व कार्यालत द्वारा हमारा उद्देश्य शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त विभिन्न प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का है।

Call Us : 91+ 9338213418, 91+ 9238328785,
E-mail Us:- gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in

उत्तम स्वास्थ्य लाभ के लिये शयन और वास्तु सिद्धांत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय



सर्वदा पूर्व या दक्षिणकी तरफ सिर करके सोना चाहिये आयु की वृद्धि होती हैं, उत्तर या पश्चिमकी तरफ सिर करके सोने से आयु क्षीण होती हैं तथा शरीर में रोग उत्पन्न होते हैं।

नोत्तराभिमुखः सुप्यात् पश्चिमाभिमुखो न च ॥

(लघुव्यास स्मृति २ । ८८)

उत्तरे पश्चिमे चैव न स्वपेद्धि कदाचन् ॥
स्वप्रादायुःक्षयम् याति ब्रह्महा पुरुषो भवेत् ।
न कुर्वीत ततः स्वप्नं शस्तम् च पूर्वदक्षिणम् ॥

(पदम पुरण, सृष्टि ५१। १२५ - १२६)

पूर्व की तरफ सिर करके सोनेसे व्यक्ति को विद्या प्राप्त होती हैं।

- दक्षिण की तरफ सिर करके सोने से धन तथा आयुकी वृद्धि होती हैं ।
- पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से प्रबल चिन्ता होती हैं ।

उत्तर की तरफ सिर करके सोनेसे धन, यश, आयु की हानि तथा मृत्यु प्राप्त होती हैं, अर्थात् आयु क्षीण हो जाती हैं।

प्राकशिरः शयने विद्याद्धनमायुश्च दक्षिणो ।
पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानिमृत्युरथोत्तरे ॥

(आचारमयूखः विश्वकर्मप्रकाश)

शास्त्रमें उल्लेख हैं कि अपने घरमें पुर्व की तरफ सिर करके, ससुरालमें दक्षिण की तरफ सिर करके और परदेश(विदेश)में पश्चिम की तरफ सिर करके सोये, परंतु उत्तर की तरफ सिर करके कभी न सोये –

स्वगेहे प्राक्छिराः सुप्याच्छ्वशुरे दक्षिणाशिराः ।
प्रत्यक्छिराः प्रवासे तु नोदक्सुप्यात्कदाचन ॥

(आचारमयूख; विश्वकर्मप्रकाश १० । ४५)

भारतीय संस्कृति में एसी मान्य ता हैं, की जिस घर मे निवास करते हो उस घर के मुख्य द्वार की और सिर या पैर कर के शयन करने से अशुभ प्रभाव प्राप्त होता हैं। क्योकि मरणासत्र व्यक्तिका सिर मुख्य द्वार की तरफ रखा जात हैं।

- धन - सम्पत्ति इच्छा रखने वाले वाले व्यक्ति को अन्न, गौ, गुरु, अग्नि और देवता के शयन स्थान के ऊपर नहीं सोना चाहिये । अर्थात: अन्न रखने वाले भण्डार गृह, गौ-शाला, गुरु के शयन स्थान, पाकशाला(रसोई गृह) और मंदिर के ऊपर शयन या शयन कक्ष नहीं बनाना चाहिये ।

ग्रह शांति हेतु विशेष मंत्र सिद्ध कवच

कालसर्प शांति कवच	3700	मांगलिक योग निवारण कवच	1450	सिद्ध शुक्र कवच	820
शनि साड़ेसाती-ढ़ैया कष्ट निवारण कवच	2350	नवग्रह शांति	1250	सिद्ध शनि कवच	820
श्रापित योग निवारण कवच	1900	सिद्ध सूर्य कवच	820	सिद्ध राहु कवच	820
विष योग निवारण कवच	1900	सिद्ध मंगल कवच	820	सिद्ध केतु कवच	820
चंडाल योग निवारण कवच	1450	सिद्ध बुध कवच	820		
ग्रहण योग निवारण कवच	1450	सिद्ध गुरु कवच	820		>> Order Now

उत्तम स्वास्थ्य लाभ के लिये भोजन और वास्तु सिद्धांत

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रोक्त मतानुशार भोजन सर्वदा पूर्व अथवा उत्तरकी ओर मुख करके करना चाहिये।

"प्राड्मुखोदड्मुखो वापि"

(विष्णु पुराण ३।११।७८)

"प्राड्मुखऽन्नानि भुञ्जी"

(वसिष्ठ स्मृति १२।१५)

दक्षिण अथवा पश्चिमकी ओर मुख करके भोजन नहीं करना चाहिये।

भुञ्जीत नैवेह च दक्षिणामुखो न च
प्रतीच्यामभिभोजनीयम्॥

(वामनपुराण १४।५१)

दक्षिणकी ओर मुख करके भोजन करनेसे उस भोजनमें राक्षसी प्रभाव आ जाता हैं।

' तद् वै रक्षांसि भुञ्जते '

(पाराशरस्मृति १।५९)

अप्रक्षालितपादस्तु यो भुड्न्के दक्षिणामुखः ।
यो वेष्टितशिरा भुड्न्क्ते प्रेता भुञ्जन्ति नित्यशः ॥

(स्कन्दपुराण, प्रभास० २१६ । ४१)

जो बिना पैर धोये भोजन करता हैं, जो दक्षिणकी ओर मुँख करके खाता हैं अथवा जो सिरमें वस्त्र लपेट कर (सिर ढककर) खाता हैं, उसके द्वारा ग्रहण किये गये अन्न को सदा प्रेत ही खाते हैं ।

यद् वेष्टितशिरा भुड्न्क्ते यद् भुड्न्क्ते दक्षिणामुखः।
सोपानत्कश्च यद् भुड्न्क्ते सर्वं विद्यात् तदासुरम् ॥

(महाभारत, अनु० ९०।१९)

जो सिरमें वस्त्र लपेटकर भोजन करता हैं, जो दक्षिणकी ओर मुख करके भोजन करता है तथा जो चप्पल-जूते पहने भोजन करता हैं, उसके द्वारा ग्रहण किये गये भोजन को आसुर समझना चाहिये।

प्राच्यां नरो लभेदायुर्याम्यां प्रेतत्वमश्नुते ।
वारुणे च भवेद्रोगी आयुर्वित्तं तथोत्तरे ॥

(पद्मपुराण, सृष्टि० ५१ । १२८)

पूर्व की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति की आयु बढ़ती हैं। दक्षिण की ओर मुख करके भोजन करने से प्रेत तत्व की प्राप्ति होती हैं। पश्चिम की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति रोगी होता हैं। उत्तर की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति की आयु तथा धन की प्राप्ति एवं वृद्धि होती हैं ।



Natural Nepali 5 Mukhi Rudraksha
1 Kg Seller Pack
Size : Assorted 15 mm to 18 mm and above
Price Starting Rs.550 to 1450 Per KG
GURUTVA KARYALAY
Call Us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
or Shop Online @
www.gurutvakaryalay.com

सर्व रोग नाशक महामृत्युन्जय मंत्र अचूक प्रभावी

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महामृत्युंजय मंत्र के विधि विधान के साथ में जाप करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर व्यक्ति को स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि स्नान करते समय शरीर पर पानी डालते समय महामृत्युन्जय मंत्र का जप करने से त्वचा सम्बन्धित समस्याए दूर होकर स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

यदि किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। जिस्से व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान देने वाले देवो के देव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन **शिव पुराण, काशीखंड** और **महापुराण** में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र का महत्व:

मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय:
स्मृत: या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,

अर्थात: जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता है।

मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं"शरीरं व्याधिमंदिरम्" ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यघि उपाधियां उत्पन्न होती रहती हैं। इस लिए हमें अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आहार-विहार, खान-पान और नियमित दिनचर्या निश्चित समय पर करना पडता हैं।

यदि इन सब को निश्चित समय अवधि पर करते रहने के बाद भी यदि कोई रोग या व्याधि हो जाए एवं वह रोग इलाज कराने के बाद भी यदि ठीक नहीं हो एवं सभी जगा से निराशा हाथ लगरही हो तो एसे अरिष्ट की निवृत्ति या शांति के लिए महामृत्युज्य मंत्र जप का प्रयोग अवश्य करें।

शास्त्रों में मृत्यु भयको विपत्ति या संकट माना गया हैं, एवं शास्रो के अनुशार विपत्ति या मृत्य के निवारण के देवता शिव हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ऋषि का जीवन अत्यल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा।

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

मंत्र उच्चारण विचार :

महामृत्युंजय मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र है। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

महामृत्युंजय मंत्र के अन्य प्रयोग

प्रयोग: 1

हर दिन स्नानादि से निवृत्त होकर अपने हाथो को स्वच्छ पानी से धोले। अपने पूजा स्थान पर एक तांबे

के पात्र में या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में 1-2 ग्लास जल भरलें। उस जल भरे पात्र में अपने दाहिने हाथ की चारों उंगली व अंगूठे को डूबादें और महामृत्युंजय मंत्र का जप करते हुएं 108 बार या 5 मिनट या 10 मिनट तक **महामृत्युंजय मंत्र** का जप करते हुएं उस जल को पीले या 1-2 घंटो में थोडा-थोडा जल पीते रहें।

एसा करने से आपके शारीर की उर्जा जाग्रत होकर उस जल भरें पात्र में सकारात्मक उर्जा केन्द्रित होती हैं। सकारात्मक उर्जा भरें इस जल को पीने से शरीर के समस्त रोग, आधि-व्याधियां स्वतः नाश हो जाती हैं।

प्रयोग: 2

जलभरा पात्र लेकर जल पर द्रष्टी डालते हुए महामृत्युंजय मंत्र जप करना भी लाभप्रद होता हैं।

प्रयोग: 3

यदि यह करने में भी आप असमर्थ हैं। संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित व पूर्ण चैतन्य युक्त ताम्बे में निर्मित महामृत्युंजय यंत्र को प्राप्त करलें।

अपने पूजन घरमें महामृत्युंजय यंत्र को स्थापित कर के प्रतिदिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर एक स्वच्छ पात्र में यंत्र को रखदें उस यंत्र पर शुद्ध जल से महामृत्युंजय मंत्र का उच्चारण करते हुए महामृत्युंजय यंत्र के उपर जलधार डाले। फिर उस जल को ग्रहण करें। महामृत्युंजय यंत्र के उपर चमच्च से एक-एक मंत्र उच्चारण करते हुए भी महामृत्युंजय यंत्र पर जल चढा कर और उस जल को ले सकते हैं।

अन्यथा आपके घर में पानी रखने का जो मटका, फिलटर इत्यादि जो साधन हो उस के अंदर महामृत्युंजय यंत्र को डूबाकर भी रख सकते हैं। इस प्रयोग से घर के सभी सदस्यो का स्वास्थ्य उत्तम रहता हैं।

नोट:

हाथ व पात्र को शुद्ध पानी से अच्छि तरह साफ करलें व पात्र में शुद्ध जल ही भरे। अन्यथा हाथ में लगी धूल-मिट्टी व किटाणु पानी के साथ मिलकर आपके भितर जायेंगे जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकता हैं।

मंत्र का जप जब पानी में हाथ डूबा हो तब 5-10 मिनट से अधिक न करें अन्यथा हाथ में पसीना होने लगेगा और पात्र के जल में उसका मिश्रण अधिक मात्रा में होने पर स्वास्थ्य के लिये नुक्शानदेह हो सकता हैं।

उक्त सभी प्रयोग हमारे वर्षो के अनुभव व शोध के आधार पर हमने पाया हैं कि यह प्रयोग तत्काल प्रभावि हैं। आप भी अपने जीवन में इस प्रयोग को अपनाकर देखलें। जिससे इस प्रयोग का शुभ परिणाम/लाभ पूर्ण पार्दर्शीता से आपके सामने होगा इस में जरा भी संदेह नहीं हैं। यहं प्रयोग हमने स्वयं व हमारे साथ लम्बे समय से जुडे हजारो बंधु/बहन प्रतिदिन करते आरहे हैं। यहं प्रयोग व्यक्ति को सभी प्रकार के रोगो से मुक्ति व उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु पूर्णतः सक्षम हैं। क्योकि इस प्रयोग से साधक अपनी स्वयं की शक्ति को केंद्रीत करता हैं।

यदि कोई व्यक्ति उक्त प्रयोग को स्वयं करने में सक्षन नहीं हो तो उसके परिवार का कोई भी सदस्य इस प्रयोग को कर के उस जल को रोगी को पीला सकते हैं।

- मंत्रजप पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा से करें।
- महिलाओं के लिये अशुद्धि के दौरान प्रयोग करना निषिध हैं।

गणेश लक्ष्मी यंत्र

प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा एवं व्यापर में वृद्धि होती हैं एवं आर्थिक स्थिमें सुधार होता हैं। गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता हैं। **Rs.325 से Rs.12700 तक**

रोग होने के संकेत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- घरमें सभी प्रकार की दवाईयां ऎर टाइट डिब्बो में बंध कर के रखें। क्योकि खूली दवाईया नकारात्मक उर्जा पैदा करती हैं जिससे रोगो की वृद्धि होती हैं जो घर के स्वस्थ्य व्यक्ति को भी शीघ्र रोगी बनादेता हैं।
- अपने बैड रुप में किसी भी प्रकार के मिरर या अन्य सामग्री जिससे शरीर का रिफ्लेक्शन होता हों जैसे आईना, टीवी इत्यादि वस्तुओ उसे ढक कर रखे या बैडरुम से निकाल दें।
- यदि निवास स्थान पर मंदिर की परछाईं पड़ रही हो, तो गृहस्वामी को अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।
- यदि निवास स्थान के सम्मुख बडा खंभा हो तो स्त्रियों में दोष उत्पन्न होता हैं।
- यदि निवास स्थान के सम्मुख श्मशान-कब्रस्तान हो तो रोगादि भय होता है।
- यदि निवास स्थान के सामने भट्टी हो तो पुत्र संतत्ति का नाश होता है।
- भवन के ऊपर से बिजली के हाई वोल्टेज वाले तारों का गुजरने से स्वास्थ्य समस्याएं घेरे रहती हैं।
- जिस भूमि आग्नेय, ईशान व वायव्य से ऊंची, वायव्य व आग्नेय से नीची और नैऋत्य से नीची हो, एसे प्लाट को स्वमुख भूखंड कहाजाता हैं। स्वमुख में निवास करने वाले व्यक्ति सदैव रोगग्रस्त रहते हैं और धन का नाश भी होता है।
- निवास हेतु जो ब्रह्मस्थान से नीचा व अन्य सभी दिशाओं से ऊंचा हो उसे नागपृष्ठ वास्तु कहा जाता हैं। नागपृष्ठ भूमि पर निवास करने वाले की पुत्री को अधिक कष्ट होते हैं व परिवार में रोगों की वृद्धि होती हैं।
- निवास हेतु उत्तर से ऊंची व दक्षिण से नीची भूमि हो उसे यमवीथी भूखंड कहा जाता है। यमवीथी भूमि पर वास करने से भवन में निवास करने वाले रोगग्रस्त होता है।
- निवास स्थान हेतु असमान आकार वाली अर्थात भुजाओं व असमान कोणों वाले भूखंड रोगकारक, शोककारक होते हैं।
- जिस भूखंड का आकार घड़े के समान हो वहां निवास करने वाले व्यक्तियों को कुष्ठ का रोग होने की संभावना अधिक रहती है।
- यदि प्लाट की दक्षिण दिशा अगर दूषित या अधिक खुली हो तो निवास कर्ता को शत्रु भय व रोग प्रदान करने वाले होती हैं।
- यदि घर का वायव्य कोण सबसे बड़ा या ज्यादा गोलाकार है तो गृहस्वामी को गुप्त रोग होने की संभावना होती हैं।

उत्तम स्वास्थ्य हेतु

- निवास हेतु उत्तम भवन दक्षिण से ऊंचा व उत्तर से नीचा होना शुभ होता हैं उसे गणवीथी भूखंड कहा जाता हैं। गणवीथी भूखंड पर निवास करने से उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती हैं व घर में रोग ज्यदा दिन नहीं रहता।
- तुलसी के नियमित सेवन से व्यक्ति के सभी रोग, शोक, पाप-ताप की शांति होती है।

हस्त रेखा एवं रोग

संकलन गुरुत्व कार्यालय

व्यक्ति कि हथेली में विभिन्न प्रकार कि रेखाऎ, पर्वत एवं उन पर उभर कर आने वाले तरह तरह के चिह्न के बदलाव से व्यक्ति को होने वाली बीमारियों का अंदाजा लगाया जासकता हैं। हर ग्रह के कुछ निश्चित चिह्न होते हैं। इन चिह्नो का प्रभाव हथेली में ग्रह के पर्वत पर होंने के अनुरुप शुभ-अशुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।

जानिए हस्त रेखा से विभिन्न रोग के संकेत

* हमे शक्ति प्रदान करने वाली सूर्य रेखा एवं स्वास्थ्य रेखा सूर्य पवर्त के समीप पाई जाती हैं।
* यदि हथेली में शनि एवं सूर्य का संबंध हो जाए तो व्यक्ति कब्ज से पीडा होती हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा कमजोर होती हैं एवं भाग्य रेखा एकदम स्पष्ट हो, आयु रेखा से जुडी हुई कोई रेखा कनिष्ठिका के तीसरे पर्व तक जाती हो, या मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हो, या उभरे हुए चंद्र पर्वत पर झंडे का चिह्न हो तो व्यक्ति बदहजमी, अपच, गैस इत्यादि रोग से पीड़ित होता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में गोल घेरे का ग्रहों के पर्वतों पर होना शुभ माना गया हैं, लेकिन गोल घेरे का रेखाओं पर होना अत्यंत अशुभ माना गया हैं। यदि गोल घेरे का हृदय रेखा पर होने से व्यक्ति को आंखो कि समस्या हो सकती हैं। मंगल पर्वत पर गोल घेरा होने से भी नेत्र संबंधित पीडा होती देखी गई हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत पर या आयु रेखा के अंत में क्रॉस या जालीदार रेखा का होना व्यक्ति को असाध्य रोग होने का संकेत देती हैं।

* जिस व्यक्ति के हाथ में स्वास्थ्य रेखा टूटी फूटी हो, या हृदय रेखा और मस्तक रेखा एक दूसरे समीप आ गई हो तो व्यक्ति को श्वास रोग होने की आशंका अधिक रहती हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा, हृदय रेखा और मस्तक रेखा के अंत में जालीदार रेखाएं हों या पर्वतों पर जालीदार रेखाएं हों, क्रॉस का चिह्न हो, हथेली पर काले या नीले रंग के धब्बे या बिंदु हों, नाखून गहरे नीले रंग के हों, नाखून टूटने वाले हों या अस्वाभाविक आकर के हों, या अंगुलियां मुड़ी हुई हों, या हथेली कि त्वचा नरम हो, हाथ हमेशा भीगा हुआ सा रहता हों, तो व्यक्ति जीवन भर किसी न किसी रोग से पीडित होकर अस्वस्थ रहता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा, हृदय रेखा और मस्तक रेखा तीनों एक जगह मिली हुई हो, या अंगुलियों के नाखूनों में खड़ी रेखाए हो, या नखून किनारों से टूटे हुए हों, नाखूनों के मूल पर चन्द्रमा काले रंगके हो या विलुप्त होगये हो, या शनि पर्वत पर जालीदार चिह्न का होना, व्यक्ति को गठिया रोग होने का संकेत देता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा पर क्रॉस होना किसी दुर्घटना ग्रस्त होने का संकेत होता हैं।
* आयु रेखा के अंत में काला धब्बा होना गंभीर चोट लगने का सूचक हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा पर काला बिंदु हो तो यह किसी बड़े रोग की सूचना देता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा अंत में दो मुखी हो जाए तो, व्यक्ति को मधुमेह होने का संकेत होता हैं।
* जिस व्यक्ति के हाथ में आयु रेखा चौड़ी हो, या उसका

मंत्र काली हल्दी

11 नंग साबूत काली हल्दी वजन 18 ग्राम मात्र रु.730/-
11 नंग साबूत काली हल्दी वजन 27 ग्राम मात्र रु.910/-

हमारें यहां काली हल्दी की गांठ एवं टुकड़े प्रति नंग वज़न 3 ग्राम से 21 ग्राम तक उपलब्ध रु. 370, 460, 550, 730, 910, 1050, 1250, 1450,

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785,
Shop @ : www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in

रंग पीला हो, या जंजीरनुमा हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य हर समय
खराब रहता हैं।

* आयु रेखा का अचानक टूट जाना व्यक्ति की किसी बीमारी के कारभ अचनाक मृत्यु का संकेत माना गया हैं।

हस्त रेखा से जाने रोग

* हृदय रेख पर काला बिंदु होना, या आयु रेखा पर नीला धब्बा हो, या हाथ में स्वास्थ्य रेखाटूटी-फूटी हो, या मस्तक रेखा के मध्य में काला धब्बा हो तो व्यक्ति को ज्वर से पीड़ा होती हैं।
* यदि चंद्र पर्वत पर गहरी धारियां हों, या मस्तक रेखा धुमावदार या टूटी हुई हो, या मस्तक रेखा पर क्रॉस का चिन्ह हो, या मस्तक रेखा का शनि पर्वत के निकट अंत होती हों, तो व्यक्ति की मानसिक बीमारी से ग्रसित होता हैं।
* मस्तक रेखा शनि पर्वत के नीचे टूट कर खत्म होती हो, चंद्र पर्वत पर टेढी-मेढी रेखाए हों, हृदय रेखा जंजीर के समान हों कर अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति को पथरी रोग होने कि संभावना रहती हैं।
* यदि हथेली कि रेखाएं पीली हो, या गुरु पर्वत अधिक उन्नत हुआ हो, या नख लंबे एवं काले हो,मस्तक रेखा और शनि पर्वत के नीचे कि रेखा जंजीरनुमा हो, तीनों मुख्य रेखाओं को कोई रेखा काट रही हो, तो व्यक्ति को क्षय रोग एवं फेफड़ों से संबंधित रोग हो जाता हैं।
* शनि पर्वत पर जाली हो, या कोई रेखा आयु रेखा एवं मस्तक रेखा को काटकर जाली को छुती हो, या चंद्रमा पर्वत पर क्रॉस हो, चंद्रमा पर्वत पर अस्त-व्यस्त रेखाएं हों, स्वास्थ्य रेख धुमती हुइ शुक्र पर्वत से जुडती हुइ कोई रेखा आयु रेखा को काटकर मस्तक रेखा को काटती हुई हृदय रेखा से मिलती हो, तो व्यक्ति मधुमेह से पीड़ित रहता हैं।
* यदि हथेली अधिक पतली एवं लंबी हो, अंगुलियां भी अधिक लचीली हो, या हथेली से थोडि बड़ी हो, या मस्तक रेखा तथा हृदय रेखा के बीच में अधिक अंतर हो, ग्रह पर्वतों की मुडने वाली ऊर्ध्वागामी रेखाएं अधिक हो, तो व्यक्ति मस्तक ज्वर से पीड़ित होता हैं।
* यदि चंद्र पर्वत काफी उन्नत हो चंद्र पर्वत के नीचे का भाग पर काफी रेखाएं हों, आयु रेखा को छुती हुई कोई रेखा चंद्र पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति व्यक्ति को मूत्र संबंधी बीमारियां पीड़ित करती हैं।

हस्त रेखा से लकवा से पीड़ित होने के लक्षण?

* यदि दोनों हाथों में शनि पर्वत पर नक्षत्र जेसा चिह्न हों।
* चंद्र पर्वत पर जालीदार रेखाएं हों।
* नखों की आकार त्रिकोण जेसा प्रतित होरहा हों।
* शनि पर्वत पर क्रॉस का चिह्न हों।
* दोनों हाथों में आयु रेखा के अंत में नक्षत्र जेसा चिह्न या भाग्य रेखा के अंत में शनि पर्वत पर नक्षत्र जेसा चिह्न हों।
* मस्तक रेखा में से कोई रेखा निकलकर शनि पर्वत तक जाती हों या वहां तीन शाखा वाली रेखा हों।
* या तीन टुकड़ों में शुक्र मुद्रा हों। मस्तक रेखा में शनि या सूर्य पर्वत के नीचे यव का चिह्न हों।
* नाखून टुकडो में बटे हुवे दिखाई देतो हों।

उपरोक्त लक्षण में से यदि एक भी लक्षण व्यक्ति के हाथ में दिखाई दे, तो व्यक्ति को लकवा रोग पीड़ित होने कि संभावनाएं अधिक होजाती हैं।

नोट: उपरोक्त सभी वर्णन पूर्णतः सिद्धान्तों पर आधारित हैं। उपरोक्त लक्षण यदि व्यक्ति कि हथेली में हो, तो उसके सूक्ष्म परीक्षण से व्यक्ति के शरीर में पीड़ा देने वाली परेशानी या भविष्य में होने वाली बीमारी का पता लगाया जा सकता हैं। इस परीक्षण कि सार्थकरा परीक्षण करने वाले के विद्वान के ज्ञान एवं अनुभव पर निर्भर करता हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा से उत्तम स्वास्थ्य लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अगर मनुष्य कुछ बातों को जान ले तो वह अपने जीवन काल में सदैव स्वस्थ रह सकता है।

आजकल बहुत से रोगों का मुख्य कारण स्नायु-दुर्बलता और मानसिक तनाव होते हैं। जिसे दूर करने में अत्याधिक लाभप्रद हैं इष्ट प्रार्थना ?

क्योकि इष्ट **प्रार्थना** से आत्मविश्वास की वृद्धि होती हैं, व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं और वहं निर्भय हो जाता हैं। इसके फलस्वरुप स्नायुविक-मानसिक रोगों से रक्षा होती हैं। इष्ट **प्रार्थना** नियमित प्रयोग अनिद्रा से बचाता हैं।

इसी प्रकार प्राणायाम मानसिक तनाव से होने वाले रोगों से बचने के लिए लाभदायी हैं।

प्राणायाम

प्रतिदिन प्राणायाम करने से शरीर शक्तिशाली बनता है और मानसिक-शारीरिक रोगों से रक्षा करता हैं।

योगाचार्यो ने प्राणायाम को दीर्घ जीवन जीने की कुंजी माना हैं।

प्राणायाम के साथ शुद्ध-सात्विक विचारो से मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार के रोगों से बचाव होता हैं यदि रोग हो, तो छुटकारा मिलता हैं।

व्यक्ति के शरीर में जिस अंग में दर्द, दुर्बलता या रोग हो उस अंगकी ओर अपना ध्यान रखते हुए प्राणायाम करना लाभप्रद माना गया हैं। प्राणायाम के दौरन शुद्ध वायु नाक द्वारा अंदर लेते समय ऎसा चिंतन करना चाहिए कि प्रकृति से स्वास्थ्य वर्धक वायु हमारी भितर पहुँच रही हैं। जहाँ शरिर में रोग या दर्द हो, तब आधा मिनट या उस्से अधिक आपकी सामर्थ्यता के अनुशार एक मिनट तक श्वास रोक कर रखें और पीड़ित स्थान का चिंतनते हुएं उस अंग में थोडा हिल-चाल करें। श्वास छोड़ते समय ऎसा चिंतन करे की मैरें शरीर या अंगो से सभी प्रकार के रोग, विकार, पीडा, गंदी इस वायु (हवा) के रूप में बाहर निकल रही हैं। जिसके फलस्वरुप मैं सभी रोगों से मुक्त हो रहा हूँ व मुझे उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती जारही हैं।

इस प्रकार प्राणायाम के नियमित अभ्यास करने से उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति में बड़ी सहायता मिलती है।

सावधानीः

- प्राणायाम करते समय जितना समय धीरे-धीरे श्वास भितर भरने में लगाया जाये, उससे दुगुना समय वायु को धीरे-धीरे बाहर निकालने में लगाना चाहिए।
- भीतर श्वास रोकने को आभ्यांतर कुंभक व बाहर रोकने को बाहय कुंभक कहां जाता हैं। रोगी और दुर्बल व्यक्ति के लिए आभ्यांतर व बाहय दोनों कुंभक करना लाभप्रद रहता हैं।
- यदि कोई व्यक्ति श्वास आधा मिनट न रोक सकें तो अपनी शक्ति के अनुशार कुछ सेकंड ही श्वास रोकें।
- ऐसे बाहय व आभ्यांतर कुंभक को पाँच-छः बार करने से नाड़ीशुद्धि व रोगमुक्ति में अदभुत सहायता मिलती है।

जीवन को संयम से जीए

उत्तम स्वास्थ्य का मूल आधार **संयम माना जाता** हैं। क्योकी व्यक्ति की रोगी अवस्था में केवल भोजन में सुधार करने से खोया हुआ स्वास्थ्य प्राप्त होता हैं। किसी भी रोग में व्यक्ति को बिना संयम के महंगी से महंगी दवाई भी लाभ नहीं करती हैं। जो व्यक्ति सर्वदा संयम से रहते हैं उनको दवाई की आवश्यकता ही नहीं पड़ती हैं। क्योकि जहाँ संयम हैं वहाँ स्वास्थ्य हैं। जिसके जीवन में उत्तम स्वास्थ्य होता हैं वहीं व्यक्ति जीवन में सफल होता हैं। रोगी व दुर्बल व्यक्ति इच्छित सफलता को प्राप्त नहीं कर पाता।

बार-बार स्वाद अर्थात जीभ के गुलाम होकर बिना भूख के बार-बार खाने को, ठुस-ठुस कर आवश्यक्ता से अधिक मात्रा में किये गये भोजन को भी असंयम कहते हैं।

आवश्यकता अनुसार नियम से स्वास्थ्यवर्धक आहार लेने को संयम कहते हैं।

इस बात को आजके आधुनिक चिकित्सक भी मानते हैं की स्वाद की गुलामी स्वास्थ्य का घोर शत्रु है।

बार-बार कुछ-न-कुछ खाते रहने के कारण व्यक्ति को अपच, मन्दाग्नि, कब्ज, पेचिश, जुकाम, खाँसी, सिरदर्द, उदरशूल आदि रोग होते हैं। यदि व्यक्ति जीवन में संयम का महत्त्व न समझें तो जीवनभर दुर्बलता, बीमारी, निराशा से संमुखीन होता हैं।

उत्तम स्वास्थ्य हेतु

एल्यूमिनियम के बर्तनों का भोजन पकाने और खाने से बचे क्योकी एल्यूमिनियम के बर्तनों का भोजन टी.बी, दमा आदि कई बीमारियों को आमंत्रित करता है।

भोजन हेतु एल्यूमिनियम के स्थान पर मिट्टी, मिट्टी चीनी, काँच, स्टील या कलई किये हुए पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्‌वितीय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

गुरुत्व कार्यालय मे "श्री यंत्र" 12 ग्राम से 2250 Gram (2.25Kg) तक कि साइज मे उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28 **से** Rs.100 >>Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com www.gurutvajyotish.com and gurutvakaryalay.blogspot.com

रोग निवारण के सरल उपाय

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

लाल किताब के उपाय

किसी व्यकित को यदि लम्बे समय से कोई बीमारी हो, या एक बीमारी समाप्त होने के बाद दूसरी कोई बीमारी से ग्रस्त हो जाता हो और यथा संभव प्रयत्न करने के उपरांत भी बीमारी से छुटकारा नहीं मिलता हो , तो इसके लिए लाल किताब के यह उपाय करें।

1. लम्बी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए शनिवार की रात को बेसन अथवा मकई की रोटी बनाकर सरसों के तेल से चुपड़कर रोगी के सिर से सात बार उतारकर रोटी को काले कुत्ते को खिलाएं। ऐसा करने से रोगी की तबीयत में सुधार होने लगता हैं। इस उपाय से लम्बे समय से चली आ रही बीमारी से भी मुक्ति मिल सकती हैं।
2. घर के सदस्यो का स्वास्थ्य उत्तम रहे इस लिये घर के सभी सदस्यों एंव घर में आए हुए मेहमानों की संख्या के अनुशार मीठी रोटियॉ बनाकर महीने में एक बार कुत्तों एंव कौए को डालदें। इस उपाय से साध्य तथा असाध्य दोनों ही प्रकार के रोगों की शांति होती है। यह रोटी तन्दूर या अग्नि पर ही बनाएं, तवे आदि पर नहीं।
3. यदि किसी भी प्रकार से रोगी की तबीयत में सुधार नहीं हो रहा हो, तो 43 दिन लगातार रात के समय २ तांबे के सिक्के अपने सिरहाने रखकर सोएं और प्रात: काल वह पैसे किसी सफाई कर्मचारी को दे दें।
4. गुप्त सहायता के रुप में कभी भी कब्रिस्तान या शमशान घाट से गुजरते समय वहां पर कुछ पैसे गिरा दें।

अन्य उपाय:

5. प्रत्येक शनिवार को प्रातः पीपल को तीन बार स्पर्श करके रोगी के शरीर पर हाथ फेरले तथा एक लोटे में कच्चा दूध, जल तथा गुड़ तीनों डाल कर पीपल पर चढ़ाने से भी लाभ प्राप्त होता है।
6. यदि दवा आदि से रोग शांत न हो रहा हो तब- शनिवार को सूर्यास्त के समय हनुमानजी के मंदिर जाकर हनुमान जी को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करें उनके चरणों का सिंदूर घर ले आयें।

घर लाकर इस मंत्र से उस सिन्दूर को अभिमंत्रित करें-

"मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।"

अभिमंत्रित सिन्दूर का रोगी के मस्तक तिलक लगा दें।

यदि कोई व्यक्ति प्रायः बिमार रहता हों उसे किसी स्वस्थ व्यक्ति (अर्थात जिस व्यक्ति को कोई विशेष रोग न हुआ हो) के वस्त्र से पहनले तो उसे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता हैं।

Free Gift GURUTVA JYOTISH
E-Magazines Subscription
to Your Dear or Near Friends
>> http://gurutvajyotish.blogspot.in/p/tell-friend.html

रत्नों का अद्भुत रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

गोमेद

राहु का रत्न गोमेद राहु ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं। गोमेद को राहु का रत्न माना गया है।

हिन्दी मे:- गोमेद, गोमेद मणि,

सस्कृत मे:- स्वर भानु, पीत रत्न, राहु रत्न, गोमेद, गौमेदक, त्रणवर, तापोमणि, पिंग स्फटिक आदि नामो से जाना जाता हैं।

अरबी मे:- हजार यमनी

लेटिन मे:- जारगून

अंग्रेजी:- हैसोनाईट, सिनोमन्स्टोन,जेसुन्थ आदि नाम से जाना जाता हैं।

गोमेद का रंग शहद जैसा होता है। शास्त्रोक्त मत से गोमेद का रंग गाय के मूत्र के रंग के समान होने से इसे गोमेद कहा जाता है।

प्राप्ति स्थान:

श्रीलंका, भारत, थाईदेश, कंबोडिया, मैडागास्कर।

गोमेद के लाभ

- गोमेद धारण करने से श्रम जनित रोगों का नाश होता हैं।
- गोमेद धारण करने व्यक्ति की निर्णय लेने की शक्ति प्रबल होती हैं।
- गोमेद धारण करने से शत्रु पक्ष परास्त्र होता हैं। विजय प्राप्त होती हैं।
- गोमेद धारण करने से नशा, बुरी आदत, परस्त्री/परपुरुष में आसक्ति कम होती हैं।
- गोमेद धारण करने से पाचन शक्ति में सुधार होता हैं।
- गोमेद धारण करने से अभक्ष्य खाद्य पदार्थो के सेवन करने की आदत से छुटकारा मिलता हैं।
- गोमेद धारण करने से विवाह बाधाएं दूर होती हैं एवं शीघ्र शादी के योग बनते हैं।
- यदि संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा हो तो गोमेद धारण करने से शीघ्र संतान प्राप्ति के योग बनते हैं।
- गोमेद में लोहे का अंश अधिक होने से गोमेद को चुंबक खींचता हैं।
- गोमेद धारण करने से हृवदय, चर्म, नेत्र, पैरों का दर्द एवं मानसिक रोगों का शमन होता हैं।
- गोमेद धारण करने से नज़र दोष, भूत-प्रेत, जादू-टोने आदि से सुरक्षा प्रदान करता हैं।
- एक श्रेष्ठ गोमेद में अद्‌भुत शक्तियां समाई होती हैं जिससे व्यक्ति के जीवन की विभिन्न परेशानियों को दूर कर सकता हैं।

मान्यता:

- असली गोमेद को उसके रंग एवं चमक से पहचाना जा सकता हैं।
- गोमेद रत्न को जब तेज रोशनी में देखने में उसका रंग गोमूत्र जैसा दिखता हैं।
- श्रेष्ठ शुद्ध गोमेद चिकना, चमकीला एवं सुन्दर दिखता हैं।
- जो लोग प्रायः अस्वस्थ्य रहते हैं कोई ना कोई बिमारी लगी रहती हैं उन्हें गोमेद पहनने से स्वास्थ्य लाभ मिलता हैं।
- गोमेद धारण करने से पाचन सम्बन्धी रोग, त्वचा रोग, क्षय रोग तथा कफ-पित्त को भी यह संतुलित रखता हैं।
- गोमेद धारण करने से व्यक्ति को मान-सम्मान एवं धन की प्राप्ति होती हैं।

दोष:

- जिस गोमेद में चीर या आडी, तिरछी, खडी रेखाएं हो, एसे गोमेद को धारण करने से रक्त विकार होता हैं।
- जिस गोमेद में परते दिखाई देती हो, एसे गोमेद को धारण करने से पशुधन की हानि होती हैं।
- जिस गोमेद अन्य रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद को धारण करने से आकस्मिक मृत्यु के योग बनाता हैं।
- जिस गोमेद में काले रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करना स्री के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस गोमेद की चमक फीकी हो, एसा गोमेद धारण करने से लकवा ग्रस्त होने की संभावना बनाता हैं।
- जिस गोमेद में लाल रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करना संतान के लिये हानिकारक होता हैं।
- जिस गोमेद को स्पर्श करने प वह रुखा व खुरदरा लगता हो, एसा गोमेद धारण करने से कार्य उद्देश्य की पूर्ति में विलम्ब होता हैं।
- जिस गोमेद में अबरक के समान चमक दिखाई देती हो, एसा गोमेद धारण करने से धन का नाश होता हैं।
- जिस गोमेद में गड्ढा हो एसे गोमेद को धारण करने से वाहन एवं पशुधन का नाश होता हैं।
- जिस गोमेद का रंग रक्त के समान लाल हो, एसा गोमेद धारण करने से विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।
- जिस गोमेद में सफेद रंग के छीटे या धब्बे हो, एसा गोमेद धारण करने से रोग-शोक में वृद्धि करने वाला होता हैं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

Become a Seller...
and get products @
Wholesale rate...
to Know more
>> Ask Us

SPECIAL OFFERS
For Seller
Join us Today
& Get Free
1 kg
Rudraksha
+
Free Gift Worth Rs.505
Digital Weight Scale

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. **28.00** **से** Rs.**100.00**

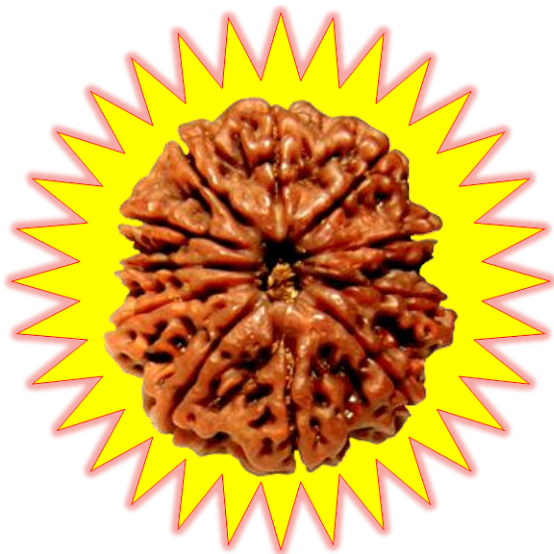
GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

एकादश मुखी रुद्राक्ष:



- एकादश मुखी रुद्राक्ष को एकादश रुद्र का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इन्द्र को भी एकादश मुखी रुद्राक्ष के देवता माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-समृद्धि व सौभाग्य की वृद्दि होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष को संतान सुख के लिए लाभकारी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष सौभाग्यवती स्त्रीयों को अपने पति कल्याण के लिए धारण करना विशेष शुभ फलदायी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष में समाज को मोहित करने की विशेष शक्ति होती हैं।
- उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए भी एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से संक्रामक रोगों से सुरक्षा होती हैं। व यदि कोई व्यक्ति संक्रामक रोग से पीडित हैं तो शीघ्र स्वस्थ्य लाभ हेतु एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- शास्त्रों में उल्लेख हैं की एकादश मुखी रुद्राक्ष को मस्तक में या शिखा पर धारण करने पर अश्वमेघ यज्ञ करने के समान फल, वाजपेय यज्ञ करने के समान फल एवं चंद्र ग्रहण में किए गए दान पुण्य के समान फल प्राप्त होते हैं।

एकादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ रुं मूं यूं औं॥

द्वादश मुखी रुद्राक्ष:



- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष में सूर्य आदि देवता वास करते हैं। इस लिए इसे आदित्यरुद्राक्ष भी कहते हैं।
- विष्णु भक्तों यदि द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करते हैं तो भगवान शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
- ब्रह्मचार्य व्रत के पालन के लिए द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करना विशेष उपयोगी सिद्ध होता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के ओज-तेज की वृद्धि होती हैं।

- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से विभिन्न प्रकारकी व्याधियों से स्वतःमुक्ति मिलने लगती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतु, चोर-लुटेरों, अग्नि भय, आदि शुद्र शक्तियों से सुरक्षा होती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश हो जाता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्र से दरिद्र मनुष्य का भी समृद्धि को प्राप्त कर लेता हैं।
- ३२ मणकों की माला कंठ में धारण करने से मनुष्य के गो-वध, मनुष्य वध एवं चोरी इत्यादि पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का कथन हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष को शिखा पर धारण करने से मनुष्य के मस्तक प्र आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं श्रौं धृणि: श्रीं॥

>> क्रमश: अगले अंक में ...

New Arrival

मंत्र सिद्ध यंत्र

लक्ष्मी-गणेश (चित्रयुक्त)	कमला यंत्र	सर्वतोभद्र यंत्र
लक्ष्मी विनायक यंत्र	भुवनेश्वरी यंत्र	कार्तिकेय यंत्र
वास्तुदोष निवारण (पुरुषाकृति युक्त)	सुर्य (मुखाकृतीयुक्त)	वसुधरा विसा यंत्र
वास्तु यंत्र (चित्रयुक्त)	हींगलाज यंत्र	कल्याणकारी सिद्ध विसा यंत्र
गृहवास्तु यंत्र	ब्रह्माणी यंत्र	कोर्ट कचेरी यंत्र
वास्तु शान्ती यंत्र	मेलडी माता का यंत्र	जैन यंत्र
महाकाली यंत्र	कात्यायनी यंत्र	सरस्वती यंत्र (चित्रयुक्त)
उच्छिष्ट गणपती यंत्र	पंदरीया यंत्र (पंचदशी यंत्र)	बावनवीर यंत्र
महा गणपती यंत्र	महासुदर्शन यंत्र	पंचगुली यंत्र
शत्रु दमनावर्ण यंत्र	कामाख्या यंत्र	सूरी मंत्र
ऋणमुक्ति यंत्र	लक्ष्मी संपुट यंत्र	तिजयपहुत सर्वतोभद्र यंत्र
लक्ष्मीधारा यंत्र	वीसा यंत्र	16 विद्यादेवी युक्त सर्वतोभद्र
लक्ष्मी प्राप्ती और व्यापारवर्धक	छिन्नमस्ता (चित्र + यंत्र)	गौतमस्वामी यंत्र
सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र	घुमावती (चित्र + यंत्र)	अनंतलब्धीनिधान गौतम स्वामी
कनकधारा यंत्र (कृमपृष्ट)	काली (चित्र + यंत्र)	भक्ताम्बर (१ से ४८) दिगम्बर
दुर्गा यंत्र (अंकात्मक)	श्री मातृका यंत्र	पद्मावती देवी यंत्र
मातंगी यंत्र	सर्वतोभद्र यंत्र (गणेश)	विजय पताका यंत्र

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop @ : www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...



- स्वप्न में थप्पड़ खाते देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में थप्पड़ मारते देखना किसी वाग-विवाद में फँसने का संकेत है।
- स्वप्न में थक जाते देखना कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में थर थर शरीर का कंपन होते देखना सामाजिक मान सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में थाली भरी देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में थाली खाली देखना सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में थूकते देखना समाज में मान सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में थैली भरी देखना देखना भूमि-भवन आदि में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में थैली खाली देखना भूमि-भवन से संबंधित कार्यों में वाग-विवाद बढ़ने का संकेत है।



- स्वप्न में दरवाजा बंद देखना मानसिक चिंता बढने का संकेत है।
- स्वप्न में दरवाजा खोलते देखना नया कार्य शुरू होने का संकेत है।
- स्वप्न में दरवाजा गिरते देखना अशुभ संकेत है।
- स्वप्न में दही देखना धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में दलिया खाते देखना स्वस्थ्य संबंधित समस्या होने का संकेत है।
- स्वप्न में दरार देखना घर में फूट पड़ने का संकेत है।
- स्वप्न में दलदल देखना काम में अरुचि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दक्षिणा की लेन-देन होते देखना व्यापार में नुक्शान होने का संकेत है।
- स्वप्न में दमकल (इंजन) चलाते देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दर्पण देखना मानसिक अशांति बढ़ने का

Now Shop Our Exclusive Products Online

Cash on Delivery Available*

www.gurutvakaryalay.com |www.gurutvakaryalay.in

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

संकेत है।

- स्वप्न में दस्ताना पहनने देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दहेज़ का लेन-देन होते देखना चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में दरजी को काम करते देखना कोर्ट-कचहरी के कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दवा खाते-खिलाते देखना नये लोगों से बंधुता होने का संकेत है।
- स्वप्न में दवा गिरते देखना रोगों से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दांत टूटते देखने शुभ संकेत है।
- स्वप्न में दांत में दर्द होते देखना नये कार्य में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दादा या दादी को मृत देखना मान सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में दान लेते देखना धन वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दान देते देखना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दाह क्रिया होते देखना मनोइच्छित कार्य संपन्न होने का संकेत है।
- स्वप्न में दातुन करते देखना कष्ट दूर होने का संकेत है।
- स्वप्न में दाना पक्षियो को डालते देखना व्यापार में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दाग-धब्बा देखना चोरी होने का संकेत है।
- स्वप्न में दामाद को देखना पुत्री को कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में दाल कपड़ो पर गिरते देखना शुभ संकेत है।
- स्वप्न में दाल पीते देखना कार्य में रूकावट का संकेत है।
- स्वप्न में दाढ़ी सफेद देखना कार्य में रूकावट का संकेत है।
- स्वप्न में दाढ़ी काली देखना धन वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में दीपक बुझाते देखना नये कार्य के शुभारंभ का संकेत है।
- स्वप्न में दीपक जलाना किसी अशुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दीवाली देखना व्यापार में घाटा होने का संकेत है।
- स्वप्न में दीपक देखना समाज में मान सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में दीपक दान करते देखना बीमारी दूर होने का संकेत हैं।
- स्वप्न में दुल्हन देखना सुख-समृद्धि मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दुकान करते देखना मान सामाजिक सम्मान बढने का संकेत है।
- स्वप्न में दुकान बेचते देखना समाज में मानहानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दुकान खरीदते देखना धन का लाभ होने का संकेत है।
- स्वप्न में दुकान बंद होते देखना कष्टों में वृद्धि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दुपट्टा देखना स्वस्थ्य लाभ का संकेत है।
- स्वप्न में दूल्हा या दुल्हन बनते देखना समाज में मान-सम्मान में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दूल्हा-दुल्हन बारात सहित देखना किसी रोग के बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में दूरबीन देखना समाज में मान-सम्मान में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में दूध देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में दुकान पर बैठते देखना धन लाभ और पद-प्रतिशठा बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में दोमुहा सांप देखना दुर्घटना से सम्मुखिन होने व मित्र द्वारा विश्वासघात होने का संकेत है।
- स्वप्न में दौड़ते देखना कार्य में असफलता मिलने का संकेत है।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

अंक ज्योतिष का रहस्य

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

मूलांक 8 स्वामी शनि

मूलांक 8	सम:- 3
स्वामी ग्रह:- शनि	स्व अंक:- 8
मित्र अंक:- 5, 6	तत्व:- वायु
शत्रु अंक:- 1, 7, 9	

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की 8, 17 व 26 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 8 होता है।

मूलांक 8 अंक के व्यक्ति का जीवन अधिक संघर्षमय और कठिनाईयों से भरा होता हैं इस लिए कभी-कभी यह लोग हताश और निराशा विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति को कार्य क्षेत्र में धीरे-धीरे उन्नति प्राप्त होती हैं।



मूलांक 8 का स्वामी ग्रह शनि हैं, इस लिए मूलांक 8 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर शनि का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 8 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर शनि ग्रह की अनुकूलता के कारण शनि ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। शनि ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति को जीवन में विभिन्न विघ्न, बाधा, परेशानीयों से जूझते हुए सफलता प्राप्त होती है।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति बडी से बडी परेशानी एवं चुनौतियों से नहीं घबराते। व्यक्ति हर परिस्थितियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने के लिए तैयार होते हैं। मूलांक 8 वाले व्यक्ति को सफलता-असफलता से ज्यादा चुनौतियों का सामना करने में रुचि रहती हैं।

व्यक्ति के अधिक सबल और सजग व्यक्तित्व होने के कारण बहुत से उतार-चढ़ाव देखने के बाद भी वहँ टूटते नहीं, उसका व्यक्तित्व सही शब्दों में लचीला हैं जो परिस्थिति के अनुरूप अपने आपको ढाल लेने की क्षमता रखता हैं। सेवाभावी, मन में करूणा, विचारों में शांति होती हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति का सबसे बड़ा शत्रु उनकी कार्य के प्रति अरुचि, आलस्य और कार्य को कल पर छोड़ देने की आदत है।

ज्योतिष के अनुशार शनि ग्रह न्याय के देवता हैं, इस कारण व्यक्ति में न्यायोचित गुण स्वतः पाये जाते हैं, व्यक्ति का यही गुण उसे समाज में उसे नाम, यश, मान-सम्मान प्राप्त कराने में सहायक होगा। व्यक्ति के न्याय प्रिय स्वभाव से निरंतर उसके विरोधि एवं शत्रु पक्ष की वृद्धि होती रहती हैं। लेकिन शत्रु पक्ष से व्यक्ति को विशेष हानी नहीं होगी।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति दिखावे से ज्यादा कुछ करने में अधिक विश्वास रखते हैं। इस कारण आपसी संबंधो के मामलो में लोग इन्हें ठंडा, कठोर हृदय या पत्थर दिल मान लेते हैं। लेकिन वास्तविकता इससे विपरित होती हैं। मूलांक 8 वाले व्यक्ति दिल से दयालु एवं भावुक होते हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति अपने काम से ही काम रखने में विश्वास करते हैं उन्हें दूसरों की चापलूसी या ख़ुशामद पसंद नहीं होती हैं। व्यक्ति के इस व्यवहार के लोग कारण उसकी आलोचना भी खुब करते हैं। लेकिन मूलांक 8 वाले व्यक्ति किसी की परवाह नहीं करते।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति जिस कार्य को हाथ में लेते हैं तो उसमें पूरी तरह डूब कर कार्य करने का प्रयास करते हैं लेकिन कभी-कभी मानसिक अशांति एवं द्वंद के कारण एकाग्र हो कर कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति को प्रायः किसी विषय वस्तु से विशेष मोह या लगाव नहीं होता मिलगया तो ठिक नहीं मिले तो ज्यादा अफसोस नहीं करतें। व्यक्ति को धन संपत्ति आदि का मोह भी अधिक नहीं होता इस कारण जीवन में यदि धन-संपत्ति किसी को देनी पडे तो देने में अधिक संकोच भी नहीं करते। व्यक्ति अपने परिश्रम एवं मेहनत से उसे पुनः प्राप्त करने में विश्वास रखते हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति अन्य लोगों के मुकाबले अत्याधिक परिश्रमि एवं संघर्षशील होते हैं। यदि कारण हैं की किसी कार्य में चाहें जितना श्रम, त्याग अथवा बलिदान देना पडे उससे पीछे नहीं होते। व्यक्ति बडी से बडी चुनौतियों को सरलता से पार कर उन्नति के शिखर पर पहूंच ने में समर्थ होते हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति का स्वभाव सेवाभावी होता हैं इनके इसी स्वभाव के कारण सामाजिक कार्य में भी विशेष रुचि होती हैं लेकिन व्यक्ति को समाज में किये गये कार्यों से विशेष लाभ नहीं मिलता। अधिकतर लोग मूलांक 8 वाले व्यक्ति को असफल तथा उदासीन मानते हैं, लेकिन वास्तव में मूलांक 8 वाले व्यक्ति यदि अपने कार्य पर विशेष ध्यान दे एवं पूर्ण लगन एवं परिश्रम से कार्य करें तो यह लोग अन्य लोगों के मुकाबले अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं इसमें जरा भी संदेह नहीं हैं। क्योकि मूलांक 8 वाले व्यक्ति अत्याधिक महत्वाकांक्षी और अपनी धुन के पक्के होते हैं, व्यक्ति की यहीं महत्वकांक्षा उसे उच्च पद पहूंचा देती हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति मित्रता निभाने में अव्वल होते हैं। यदि कोई इन्हें छल करें तो यह उसे आसानी से माफ भी नहीं करते, व्यक्ति उसे दंड देकर ही छोडता हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति प्रायः समय हताश और निराश होते हैं क्योंकी यह लोग छोटी-छोटी बातों को दिल से लगा कर बैठ जाते हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति उम्मिद से कहीं अधिक चालाक होते हैं, इन्हें कोई आसानी से ठग नहीं सकता।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785 | Shop Online : www.gurutvakaryalay.com

व्यक्ति अपने हो या पराये हर किसी को शंकाशील नज़रों से देखता हैं। इस कारण व्यक्ति को निंदा एवं अपमान का सामना करना पड़ता हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्ति को धन की कमी नहीं होती व्यक्ति को जीवन में धन मिलता रहता है।

मूलांक 8 विश्वास का अंक माना गया हैं। मूलांक 8 वाले व्यक्ति का स्वाभाव सहयोगी स्वभाव के होते हैं, व्यक्ति यदि किसी का मित्र और सहयोगी होता हैं तो प्रत्येक रूप से उसे सहायता पहुँचाते रहते हैं, मूलांक 8 वाले व्यक्ति उसके जीवन की ढाल बनकर रहते हैं और विशाल वृक्ष की तरह अपनी शीतल छाया से उसे सुख पहुँचाते रहते हैं। परतु जब व्यक्ति किसी पर क्रोधित हो या शत्रुता कर लेते हैं, तब प्रचंड रूप धारण कर लेते हैं, सभी प्रकार से उसे नष्ट करने पर उतर हो जाते हैं।

शुभ दिन:

शुभ वर्ष 17,26,35,44,53,62,71 वां वर्ष हैं, तिथि 8,17,26 शुभ दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में शनिवार का दिन पड़े तो बहुत शुभ होता हैं।

स्वास्थ्य:

व्यक्ति को जिगर से संबंधि रोग लगे रहते हैं। व्यक्ति के लीवर कमजोर होन की वजह से अन्य अनेक बीमारियां आकर घेर लेती हैं। व्यसनों से हरदम दूर रहना चाहिये। दुर्बलता, पेट दर्द, दंत रोग, त्वचा रोग, पांव तथा घुटनों से संबंधित बीतारियां, आँख, कान, गठिया, लकवा, जोड़ों में दर्द तथा घाव आदि की षिकायते भी होती रहती हैं। स्त्री धर्म संबंधित विभिन्न बीतारियां हो जाती हैं।

उपयुक्त आहार:

संतरा, पपीता, अनानस, नींबू, ककड़ी, खीरा, गाजर, टमाटर, पालक, ईसबगोल, सौंफ एवं अजवायन उपयोगी हैं।

अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति इंजीनियर, कसरत, खेलकूद, सैन्य, लघु उघोग, ज्योतिष, वैज्ञानिक, अध्यापक, नगरपालिका, धर्म-कर्म, ठेकेदारी, वकालत, गार्डन, बागवानी, कोयला, खान, पषुपालन, लोहा, लकड़ी, पुलिस, जेल आदि संबंधित

ई- जन्म पत्रिका (एडवांस्ड)	E- HOROSCOPE (Advanced)
अत्याधुनिक ज्योतिष पद्धति द्वारा उत्कृष्ट भविष्यवाणी के साथ 500+ पेज में प्रस्तुत	Create By Advanced Astrology Excellent Prediction 500+ Pages

हिंदी/ English में मूल्य मात्र 2800 Limited time offer 1225 Only

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए अनुकूल दिशा पश्चिम और नौऋत्य कोण है। व्यक्ति के लिएगहरा, भूरा, काला, गहरा नीला, जामुनी, हरा और सफेद रंग शुभता सूचक हैं।

मूलांक 8 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपके मूलांक स्वामी शनि के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी मध्यमा उंगली में निलम धारण कर सकते हैं। जो निलम धारण करने में असमर्थ हो वे कटेला या नीली धारण कर लाभप्राप्त कर सकते हैं।
- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित शनि गणेश, शनि यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

शनिवार का व्रत: शनि ग्रह को प्रसन्न करने हेतु शनिवार का व्रत किया जाता हैं। शनिवार का व्रत करने से संपत्ति में वृद्धि होती हैं, खोया हुवा धन पूनः प्राप्त होता हैं। शिक्षा प्राप्ति में आरहे बाधा विघ्न दूर होते हैं। पेटा और पैर के रोग में लाभ प्राप्त होता हैं, पूराने रोग भी थिक होजाते हैं। शनिवार का व्रत करने से शनि के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओ से लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका मूलांक स्वामी शनि हैं अतः शनि ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 7 मुखी या 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप मुखी या 14 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 4 मुखी रुद्राक्ष और 6 मुखी या 13 मुखी भी धारण करने से आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

शांति के लिए दान

ग्रह:- शनि, वार:- शनिवार

शनि ग्रह कि शांति हेतु निलम, काला कपड़ा, साबुत उड़द, लोहा, यथा संभव दक्षिणा, तेल, काला पुष्प, काले तिल, चमड़ा, काले कंबल का दान करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं

ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- स्वास्थ्य लाभ हेतु शनिवार के दिन रोटी पर सरसो का तेल लगाकर कुत्ते और कौएं को खिलाएं।
- आर्थिक लाभ के लिये अपने घर में पीले फूल का पौधा लगाएं।
- भूमि-भवन से संबंधित कार्यो में सफलता हेतु चीटीओं को चीनी डालें.
- शिक्षा से संबंधित समस्या दूर करने के लिए गणपति जी की पूजा करें।
- दांपत्य सुख में वृद्धि हेतु रात को तांबे के पात्र में जलभरकर रख ले और सुबह में उस जल को लाल पुष्प वाले पौधों में डालदें।
- भाग्य वृद्धि हेतु शुक्रवार के दिन घर में सफेद मिष्ठान पाकाएं और परिवार के साथ में खाएं।

>> क्रमश: अगले अंक में ...

ग्रह शांति हेतु विशेष मंत्र सिद्ध कवच

कालसर्प शांति कवच	3700	मांगलिक योग निवारण कवच	1450	सिद्ध शुक्र कवच	820
शनि साड़ेसाती-ढ़ैया कष्ट निवारण कवच	2350	नवग्रह शांति	1250	सिद्ध शनि कवच	820
श्रापित योग निवारण कवच	1900	सिद्ध सूर्य कवच	820	सिद्ध राहु कवच	820
विष योग निवारण कवच	1900	सिद्ध मंगल कवच	820	सिद्ध केतु कवच	820
चंडाल योग निवारण कवच	1450	सिद्ध बुध कवच	820		
ग्रहण योग निवारण कवच	1450	सिद्ध गुरु कवच	820	>> Order Now	

कृच्छ्र चतुर्थी व्रत: 11 दिसम्बर 2018

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कृच्छ्र चतुर्थी व्रत:

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी की कृच्छ्र चतुर्थी कहा जाता है।

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की कृच्छ्रचतुर्थी व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके फिर दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में करनेसे चार वर्षमें पूर्ण होता है।

कृच्छ्रचतुर्थी व्रत की विधि यह है कि पहले वर्षमें (मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी को) प्रातःस्त्रानके पश्चात् व्रतका नियम ग्रहण करके गणेशजीका यथाविधि पूजन करे। नैवेद्यमें लड्डू तिलकुटा, जौका मँडका और सुहाली अर्पण करके इस मंत्र का उच्चारण करें..

त्वत्प्रसादेन देवेश व्रतं वर्षचतुष्टयम्। निर्विघ्नेन तु मे यातु प्रमाणं मूषकध्वज॥ संसारार्णवदुस्तारं सर्वविघ्नसमाकुलम्। तस्माद् दीनं जगन्नाथ त्राहि मां गणनायक ॥

प्रार्थना करके एक बार परिमित भोजन करे। इस प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको करता रहकर दूसरे वर्ष उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको पुनः यथापूर्व नियम ग्रहण, व्रत और पूजा करके फक्त (रात्रिमें एक बार) भोजन करे। इसी प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके तीसरे वर्ष फिर मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको व्रत नियम और पूजा करके अयाचित (अर्थात बिना माँगे जो कुछ जितना मिले उसीका एक बार) भोजन करे।

इस प्रकार एक वर्ष तक प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथे वर्षमें उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको नियम ग्रहण, व्रत संकल्प और पूजनादि करके निराहार उपवास करे। इस प्रकार वर्षपर्यन्त प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथा वर्ष समाप्त होनेपर सफेद कमलपर ताँबेका कलश स्थापन करके सुवर्णके गणेशजीका पूजन करे। सवत्सा गौका दान करे, हवन करे और चौबीस सपत्नीक ब्राहमणोंको भोजन करवाकर वस्त्राभूषणादि देकर स्वयं भोजन करे तो इस व्रतके करनेसे सब प्रकारके विघ्न दूर हो जाते हैं और व्रती को सब प्रकारकी सम्पत्ति प्राप्त होती है।

वरचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की यह व्रत कृच्छ्रचतुर्थीके समान यह व्रत भी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर चार वर्षमें पूर्ण होता है।

प्रथम वर्षमें प्रत्येक चतुर्थीको दिनार्द्धके समय एक बार अलोन (बिना नमक का) भोजन, दूसरे वर्षमें नक्त (रात्रि) भोजन, तीसरेमें अयाचित भोजन और चौथेमें उपवास करके यथापूर्व समाप्त करे। यह व्रत सब प्रकारकी अर्थसिद्धि देने वाला है।

परिमित भोजनके विषयमें कहीं पर 32 ग्रास और किसीने 29 ग्रास बतलाये हैं।

स्मृत्यन्तर में उल्लेख हैं

अश्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः षोडशारण्यवासिनः।
द्वात्रिंशद् गृहस्थया परिमितं ब्रह्मचारिणः ॥

अर्थात: मुनिको आठ, वनवासियोंको सोलह, गृहस्थोंको बत्तीस और ब्रहमचारियोंको अपरिमित (यथारुचि) ग्रास भोजन करनेको कहा गया है।

ग्रासका प्रमाण है एक आँवलेके बराबर अथवा जितना सुगमतासे मुँहमें जा सके, उतना एक ग्रास होता है। न्यून भोजनके लिये (याज्ञवल्क्यने) तीन ग्रास नियत किये हैं।

धन वृद्धि डिब्बी

धन वृद्धि डिब्बी को अपनी अलमारी, कैश बोक्स, पूजा स्थान में रखने से धन वृद्धि होती हैं जिसमें **काली हल्दी**, लाल- पीला-सफेद लक्ष्मी कारक हकीक (अकीक), लक्ष्मी कारक स्फटिक रत्न, 3 पीली कौडी, 3 सफेद कौडी, गोमती चक्र, सफेद गुंजा, रक्त गुंजा, काली गुंजा, इंद्र जाल, माया जाल, इत्यादी दुर्लभ वस्तुओं को शुभ महुर्त में तेजस्वी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किय जाता हैं। **मूल्य मात्र** Rs-730 >> Order Now

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दु:खदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***



कालसर्प शांति हेतु अनुभूत एवं सरल उपाय

मंत्र सिद्ध कालसर्प शांति यंत्र

मंत्र सिद्ध कालसर्प शांति कचव

विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785



सर्व कार्य सिद्धि कवच



जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

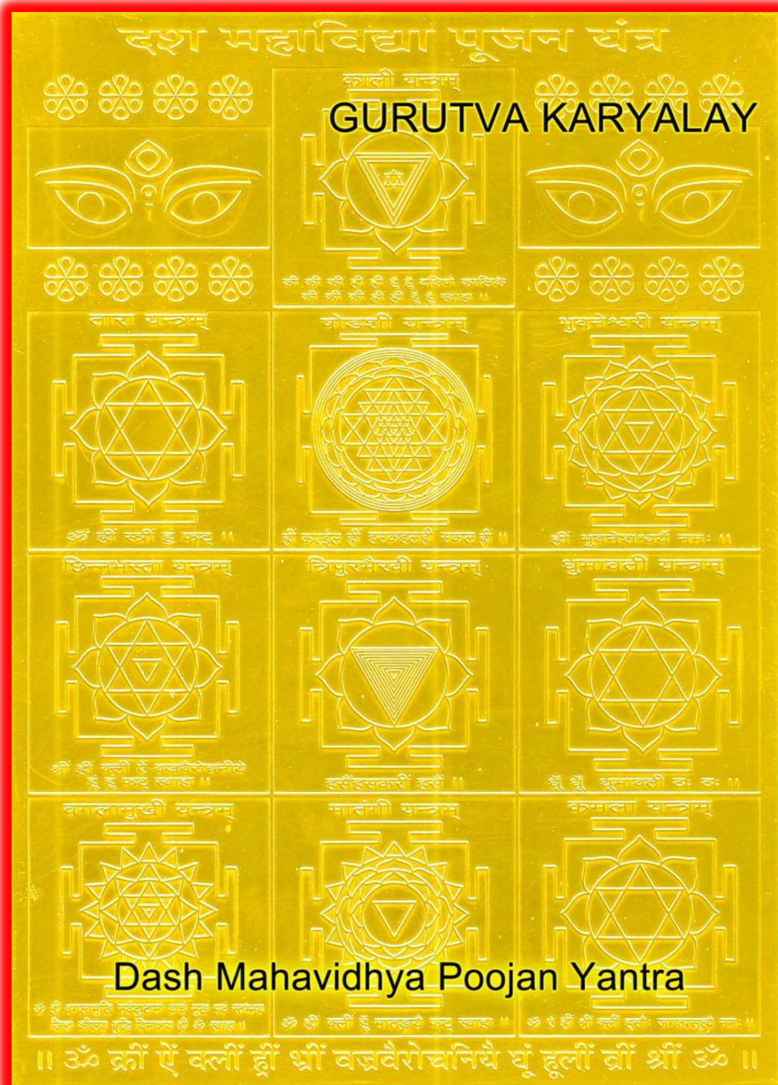
GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in

Shop Online: www.gurutvakaryalay.com

दस महाविद्या पूजन यंत्र



दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

>> **Shop Online**

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Shop Pnlone @ : www.gurutvakaryalay.com

अमोद्य महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। >> Order Now

GURUTVA KARYALAY
91+ 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Website: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |

श्री हनुमान यंत्र

शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रहमा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं। श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 325 से 12700 तक** >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY :Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित
22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रहमा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,

BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
9	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वितीया	15:48	मूल	08:07	गण्ड	21:04	कौलव	15:48		
10	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	18:01	पूर्वाषाढ़ 1	10:36	वृद्धि	21:36	गर	18:01		
11	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	20:37	उत्तराषाढ़	13:29	ध्रुव	22:25	वणिज	07:17		
12	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	23:23	श्रवण	16:36	व्याघात	23:23	बव	09:59		
13	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	26:08	धनिष्ठा	19:45	हर्षण	24:20	कौलव	12:47		
14	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	28:36	शतभिषा	22:42	वज्र	25:07	गर	15:25		
15	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	30:32	पूर्वाभाद्रपद	25:13	सिद्धि	25:33	विष्टि	17:38		

9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
9	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वितीया	15:48	-
10	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	18:01	-
11	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	20:37	वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चंद्र अस्त रात 20:57)
12	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	23:23	विवाह पंचमी, श्री पंचमी, श्रीसीता-राम विवाहोत्सव, नागपंचमी (द.भारत)
13	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	26:08	चम्पा षष्ठी, मूलकरूपिणी षष्ठी, सुब्रह्मण्यम षष्ठी, स्कन्द (कुमार) षष्ठी व्रत,
14	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	28:36	विष्णु सप्तमी, नन्दा सप्तमी, भद्रा सप्तमी, मित्र सप्तमी, निम्ब सप्तमी, नरसिंह मेहता जयंती,
15	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	30:32	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, कुमारिका-पूजन

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‌भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संततित्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

>> **Shop Online** | **Order Now**

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इसलिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

अमोद्य् महामृत्युंजय
कवच
दक्षिणा मात्र: 10900

राशी रत्न एवं उपरत्न



सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
09	प्रातः 06:09 से प्रातः 08:08 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
11	प्रातः 04:16 से रात 08:22 तक (पाताल)	05	प्रातः 04:16 से संध्या 05:19 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

Beautiful Stone Bracelets

- Lapis Lazuli Bracelet
- Rudraksha Bracelet
- Pearl Bracelet
- Smoky Quartz Bracelet
- Druzy Agate Beads Bracelet
- Howlite Bracelet
- Aquamarine Bracelet
- White Agate Bracelet
- Amethyst Bracelet
- Black Obsidian Bracelet
- Red Carnelian Bracelet
- Tiger Eye Bracelet
- Lava (slag) Bracelet
- Blood Stone Bracelet
- Green Jade Bracelet
- 7 Chakra Bracelet
- Amanzonite Bracelet
- Amethyst Jade
- Sodalite Bracelet
- Unakite Bracelet
- Calcite Bracelet
- Yellow Jade Bracelet
- Rose Quartz Bracelet
- Snow Flakes Bracelet

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785, Shop @ : www.gurutvakaryalay.com

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

>> **Shop Online** | **Order Now**

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach	1050

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..………………………….	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ………………………..	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …….………………….	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) ………….	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach …….………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………...…..	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..…………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...………….	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……...……………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………..	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ……………………………….	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..………………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..…………………...…..	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..……………...………….	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..…………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ……………………………….	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..……………………..	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..…………………………...	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ……..…………………………….	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………...	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..……………………..	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………..	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………..	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach ……………………………….	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640





उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

9 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2018

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



GURUTVA JYOTISH

Weekly

9-Dec to 15-Dec 2018